निकोल जॉनसन

– राधिका श्रीवास्तव

मधुमेह वाणी के नवम्बर दिसम्बर-2005 के अंक में हमने 'निकोल जॉनसन' की कहानी प्रकाशित की थी। उस समय हमें अनेक बाल मधुमेहियों के पत्र प्राप्त हुये, जिनमें बताया गया कि उन्हें यह कहानी बहुत ही रोचक एवं प्रेरणादायक लगी। किस तरह एक बाल मधुमेही होते हुये भी निकोल संघर्षपूर्ण जीवन जीते हुये मिस अमेरिका बन पाईं।

संयोगवश केपटाऊन साउथ अफ्रीका में हाल ही में सम्पन्न इंटरनेशनल डायबिटीज़ फैडरेशन के सम्मेलन में हमारी मुलाकात निकोल से फिर हुई। निकोल भारतीय डॉक्टरों के एक छोटे-से ग्रुप के साथ एक भारतीय रेस्टोरेंट में डिनर पर भी आईं। निकोल बहुत ही प्रसन्न थीं कि वे अब एक माँ भी हैं। निकोल ने बताया कि जब उन्हें डायबिटीज़ हुई थी अनेक डॉक्टरों ने उनसे कहा था कि उनके लिये माँ बनना बहुत मुश्किल होगा। उन्होंने डॉक्टरों की इस बात को एक चुनौती की तरह लिया। गर्भावस्था में पूर्ण सावधानी रखते हुये अपनी शुगर लगभग सामान्य नियंत्रण में रखते हुये उन्होंने एक फूल-सी नन्हीं बच्ची को जन्म दिया। निकोल सभी बाल मधुमेही लड़कियों को यह संदेश देना चाहती हैं कि वे सामान्य तरीके से गर्भ धारण कर सकेंगी एवं माँ भी बन सकेंगी।

हमारा यह अंक बाल मधुमेहियों को समर्पित है। अतः इस अंक में हम निकोल की कहानी को पुर्नप्रकाशित कर रहे हैं। निश्चित ही यह कहानी बाल मधुमेहियों की निराशा को दूर करेगी एवं उनके लिये प्रेरणा का स्त्रोत होगी।

– डॉ. सुशील जिन्दल

बाल मधुमेही, फिर भी मिस अमेरिका

केपटाऊन में निकोल जॉनसन के साथ डॉ. सुशील जिन्दल

सौन्दर्य प्रतियोगिता की चकाचौंध व आकषर्ण के पीछे प्रतियोगिताओं की कड़ी मेहनत, तनाव और निराशा आदि का अंदाज़ हम दूर से नहीं लगा सकते। शरीर को सुडौल रखने के लिये व्यायाम, रिहर्सल, उच्चारण व सही समय सही जवाब देना अपने आप में बहुत कठिन कार्य है। इस पर यदि मधुमेह हो जाये और वो भी टाईप–1 (बाल मधुमेह) तो अच्छे–से–अच्छे व्यक्ति भी टूट जायेंगे। आज हम आपको एक ऐसी ही हस्ती के बारे में बतायेंगे जो दुनियाँ के लाखों बाल मधुमेही मरीज़ों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत हैं। जी हाँ, ये कहानी है निकोल जॉनसन की जो सन् 1999 की मिस अमेरिका रह चुकी है।

निकोल स्कूल के दिनों से ही बहुत सुंदर व प्यारी–सी दिखती थी। पढ़ने में निकोल शुरू से ही बहुत अच्छी थी और साथ–ही–साथ खेलकूद में भी अव्वल। कॉलेज में आने पर निकोल ने सौंदर्य प्रतियोगिताओं के भाग लेना शुरू किया। शुरुआती सफलताओं के बाद उसने एक सपना संजोया, सपना मिस अमेरिका पत्रकारिता के क्षेत्र में झण्डे गाड़ने का। इन्हीं उद्देश्यों के साथ उसने शुरू की कड़ी मेहनत। पत्रकारिता की पढ़ाई और सौंदर्य प्रतियोगिताओं की तैयारी दोनों के लिये बहुत आत्मविश्वास, लगन और सम सामयिक मुद्दों की जानकारी की जरूरत थी। निकोल जी जान से उसमें लगी रहीं।

19 वर्ष की उम्र में निकोल को पहला ब्रेक मिला तब उन्हें पहली बार किसी बड़ी सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिला – यह थी मिस फ्लोरिडा की प्रतियोगिता। यह एक लम्बी प्रतियोगिता थी और निकोल अच्छे अंक लेते हुये फायनल तक जा पहुँची। परन्तु ऐन फायनल के दिन निकोल को अच्छा नहीं लग रहा था।

उनका मुँह सूख रहा था, चक्कर से आ रहे थे। बार–बार पेशाब के लिये जाना पड़ रहा था। उसे पेट में दर्द शुरू हो गया और वो ड्रेसिंग रूम में चक्कर खाकर गिर गई। ड्रेसिंग रूम में ही डॉक्टर को बुलाया गया। उसने निकोल को देखने के बाद बताया कि शायद एपेंडिक्स का दर्द है जो फूट सकता है। उसने उसे तुरंत अस्पताल ले जाने की सलाह दी। निकोल को ताज के इतने करीब होते हुये भी हाथ से निकलता दिखा। उसने डॉक्टर की सलाह न मानते हुये प्रतियोगिता पूरी करने की ठानी। पिछले अच्छे स्कोर व दर्द निवारक दवाईयों के सहारे वो स्टेज पर जा पहुँची व मिस फ्लोरिडा बन ही गई। प्रतियोगिता के बाद निकोल अस्पताल पहुँची जहाँ उनका जीवन ही बदल गया। उनकी शुगर 509 थी और उनके मम्मी–पापा ने उसे बताया कि डॉक्टरों का मानना है कि वह बाल मधुमेही है। यह सुन निकोल फूट–फूट कर रोने लगी। उसे लगा उसके सारे सपने चकनाचूर हो गये। ईश्वर ने उसके साथ ऐसा क्यों किया? उसने कभी किसी का बुरा नहीं किया, किसी को धोखा नहीं दिया, पूरी मेहनत से पढ़ी। फिर वहीं क्यों? उसे स्कूल के एक सहपाठी का ध्यान आया जो स्कूल में इंजेक्शन लिया करता था। वो बाल मधुमेही था और उसकी बाद में इसी रोग से मृत्यु हो गई थी। निकोल ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि डॉक्टर और रिपोर्ट गलत हों। पर ऐसा कुछ न हुआ और वो हमेशा के लिये मधुमेही बन गई।

शुरू में घोर निराशा व हीनता के भाव रहे पर जल्दी ही वे उनसे उबर आई। नये संकल्प के साथ। संकल्प यह कि शायद उन्हें ईश्वर ने यह बीमारी लाखों बाल मधुमेहियों की सहायता करने के लिये दी है। उन्होंने मधुमेह, इन्सुलिन आहार व व्यायाम के बारे में बहुत जानकारी प्राप्त की। उन्हें दिन में 3 से 4 बार इन्सुलिन इंजेक्शन लगाने पड़ते थे फिर भी न उन्होंने मिस अमेरिका बनने का सपना छोड़ा और न ही पढ़ाई। निकोल घर छोड़ साउथ फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी में पढ़ने चली गई। वो पत्रकारिता में मास्टर्स की डिग्री लेना चाहती थीं। पढ़ाई के साथ दिन में कई बार इंसुलिन व कई बार ब्लड शुगर देखने का सिलसिला चलता रहा। ग्लूकोमीटर पर ''हाई शुगर'' देख वो निराश हो जाती, अक्सर उन्हें अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ते। कभी लो तो कभी हाई शुगर के लिये। अस्पतालों में उन्हें इमरजेन्सी रूम में जूनियर डॉक्टर देखते। निकोल को लगता ये डॉक्टर मधुमेह के बारे में कितना कम जानते हैं? वो अंदाज़ से उन्हें इंसुलिन कम या ज्यादा करवा देते और उनका मधुमेह

निकोल अपनी नवजात बेटी के साथ

नियंत्रण और बिगड़ जाता। निकोल का कहना है बाल मधुमेही के लिये सबसे अच्छा डॉक्टर ऐन्डोक्राईनों लॉजिस्ट है।

इसी बीच निकोल ने मिस विरजीनिया प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान शुगर बहुत कम हो गई और वो लगभग बेहोश हो गई। उन्हें जूस और ग्लूकोज़ देकर होश में लाया गया। सभी ने उन्हें प्रतियोगिता से हटने की सलाह दी। उन्होंने लगभग मान भी लिया पर फिर उन्हें लगा क्या बीमारी के कारण वे अपने सपने भूल जायेंगी? एक बार फिर सारी हिम्मत बटोर कर उन्होंने हार मानने से इंकार कर दिया और मिस विरजीनिया का खिताब जीता। इसके बाद उन्होंने संकल्प किया कि अब वो अपनी बीमारी को छिपायेंगी नहीं। उन्होंने सार्वजनिक किया कि हाँ वे बाल मधुमेही हैं और इंसुलिन के सहारे जी रही हैं। वे अमेरिकन डायबिटीज ऐसोसिऐशन से जुड़ी व मधुमेह जागरुकता के लिये काम करने लगीं। उन्होंने खुद की संस्था भी बनाई जो बाल मधुमेही रोगियों के लिये काम कर रही हैं। निकोल को मालूम था लोग बाल मधुमेही को हीनता व सहानुभूति की दृष्टि से देखते हैं। उनका खुद का अनुभव था कि जब यह पता चलता उन्हें मधुमेह है बॉयफ्रेंड उन्हें छोड़ देते थे। उन्होंने स्टेज शो व संगीत व बालमधुमेह कैंप लगाकर मधुमेह जागरुकता के लिये पैसे जुटाये और जरूरतमंद बच्चों को दिये।

इसी दौरान उन्होंने अपने डॉक्टर की सलाह से इंसुलिन पम्प लगाना शुरू किया। यह एक मोबाइल फोन के आकार का उपकरण होता है जो एक महीन ट्यूब व सुई लगातार इंसुलिन शरीर में देता रहता है। खाने से पहले इसमें लगे बटन से अतिरिक्त इंसुलिन दी जाती है। निकोल को भय था कि स्टेज पर वह कैमरों व दर्शकों से कैसे छुपा पायेगी?

फिर आयी निकोल की परीक्षा की घड़ी। मिस अमेरिका का खिताब। यह एक लम्बी प्रतियोगिता थी। टेलेंट, ईवनिंग वियर, स्विमसूट जैसी अनेक पायदानों में अच्छा स्कोर करती निकोल अंतिम दस तक पहुँची। बार–बार कपड़े बदलना, जूते बदलना स्टेज पर सँभलते हुये संतुलन पूर्वक चलना और साथ–ही–साथ इंसुलिन पम्प को छुपा कर रखना। सारे कैमरे व हजारों दर्शक पैनी निगाह से उसे देख रहे थे। इन सभी को सफलता पूर्वक पार करते निकोल फायनल में आ गईं। अब सारा दारोमदार जजों के प्रश्नों का सही, संतुलित व छा जाने वाला उत्तर देने पर था।

निकोल कुछ भी नहीं सोच पा रही थीं कि उनसे क्या पूछा जायेगा। फिर एक अनहोनी हुई जिसके लिये निकोल कतई तैयार नहीं थी। जज ने उनसे पूछा ''क्या आपने इंसुलिन पम्प पहना हुआ है?'' निकोल बोली ''हाँ'', जज ने फिर पूछा – ''कहाँ''? निकोल ने जांघ पर से कपड़े हटाते हुये कहा ''यहाँ'' और मुझे इस बात पर गर्व है कि अपनी बीमारी और इस पम्प के बाद भी मैं यहाँ तक पहुँची हूँ। सारे साल में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी जो थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। परिणाम घोषित हुये। चौथे नम्बर पर हैं......, तीसरे नम्बर पर हैं....., दूसरे पर ......, और मिस अमेरिका हैं..... निकोल जॉनसन। आज निकोल ने बीमारी को हरा दिया था। वह उन लाखों लोगों के लिये प्रेरणा बन गई थीं जो बीमार हैं पर कुछ कर गुजरना चाहते हैं। खिताब के बाद उनकी जिंदगी बदल गई। यह भी एक संयोग था कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाली मिस न्यूयॉर्क–डीना हरेरा भी बाल मधुमेही थीं।

निकोल स्वयं पत्रकारिता की छात्रा थीं पर उन्हें पत्रकारों से बहुत डर लगता था। वे अक्सर छोटी–सी बात का हऊआ बनाकर पेश करते थे और बेहद घटिया प्रश्न करते। अब उन्हें बहुत यात्राएँ करनी पड़तीं, इंटरव्यू देने पड़ते। परंतु उनको लगा कि ईश्वर ने उनके लिये तय किया है कि उन्हें बाल मधुमेहियों के लिये काम करना है। उन्हें दुनियाँ भर से बाल मधुमेही बच्चों के संदेश आते। बच्चे उनसे पूछते क्या आप हमारे लिये इंसुलिन से छुटकारा दिलाने वाला ईलाज ढूँढ देंगी? निकोल ने अपना पूरा जीवन मधुमेह को समर्पित कर दिया। उन्होंने पाँच किताबें लिखीं। वे दुनियाँ भर की मधुमेह रोगियों से मिलती हैं। गरीब बच्चों के लिये इंसुलिन का खर्चा देती हैं।

आज वो हॉलीवुड अभिनेत्री भी हैं पर अपनी कमाई का बड़ा भाग वे बाल मधुमेही संस्थाओं को दे देती हैं। वे अमेरिकन डायबिटीज़ ऐसोसियेशन के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर में है व इसकी प्रमुख प्रवक्ता भी हैं।

तो दोस्तों यह थी कहानी निकोल की। हमें पूरी उम्मीद है कि हमारे देश मे भी बाल मधुमेही निकोल से प्रेरणा लेंगे और कभी बीमारी से हार नहीं मानेंगे।